Dr. Suman Lal Rap
Assistant professor
Deptt. of sanskrit,
S.R.A.P. college, Bara
chakia

B.A. (Hons.) Part – II
subject – sanskrit
paper – IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)

श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद

श्लोक सं० – 27

भव हृदय साभिलाषं सँप्रति सँदेहनिर्णयो जातः।
आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम् ॥

अन्वयः

हे हृदय! सम्प्रति सन्देहनिर्णयो जातः (अतः) साभिलाषं भव। यत् अग्निम् आशङ्कसे तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम् (अस्ति)।

अनुवाद

हे हृदय! अब सन्देह का निर्णय हो गया, अतः अब तू इसकी इच्छा कर सकता है; क्योंकि जिसे तू अग्नि समझा था वह तो स्पर्श के योग्य शीतल रत्न निकला।

Scanned by TapScanner